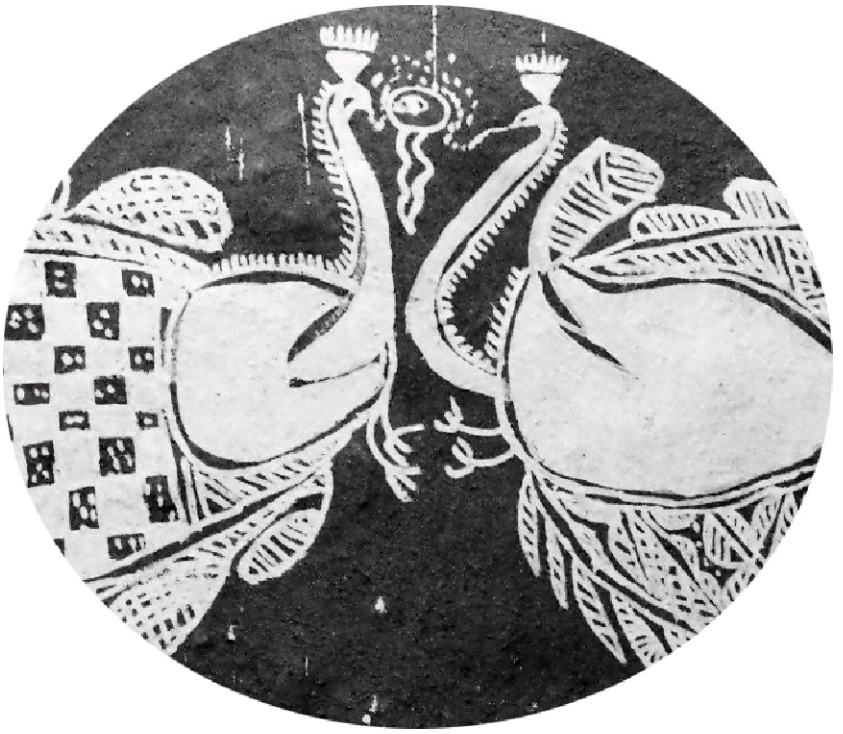

मोरंगे

दिसम्बर 09

ये चाँद इन तारों की फुटबॉल है

ये सूरज है ये अपने लिए बाल्टी लेकर पानी भरने जा रहा है
ये सूरज बाबा की टंकी है
ये इसमें नहायेगा और पानी भरके ले जायेगा

ये खरगोश है ये डोंगरी में जा रहा है
और ये लड़का सड़क–सड़क खरगोश को पकड़ने जा रहा है
ये लड़का चिड़िया से डोंगरी का रास्ता पूछ रहा है

ये आसमान है इसमें बहुत सारे बादल सैर करने निकले हैं
ये भेड़ बकरियाँ हैं ये जंगल से घर को जा रही हैं
ये रात है इसमें ये काला–काला अँधेरा हो रहा है
ये तारे हैं ये फुटबॉल खेल रहे हैं
ये चाँद इन तारों की फुटबॉल है
ये बच्चा तारों से कह रहा है कि मुझे भी खिला लो

किरण, उम्र–5 वर्ष, समूह–महक, जगनपुरा

हाथी है कि खेल

हाथी मेरे
सच्चे साथी
पहलवान तू पट्ठा
खाता है गन्ना और केला
है तू हट्टा कट्टा

खम्बे जैसे तेरे पैर
साँप के जैसी तेरी पूँछ
रंग तेरा बिल्कुल काला है
जैसे कोई रीछ

तेरे दाँत हैं जैसे भाले
धरती हिलती जब तू चाले
सूँड है तेरी जैसे रेल
अब मुझको सच–सच बतला
तू हाथी है कि खेल

जितेन्द्र गुर्जर, उम्र–14 वर्ष, समूह–बादल

इस बार

कविताएँ
ये चाँद इन तारों की फुटबॉल है
मौसम ठण्डा है और आकाश में काले बादल
क्या कर रहे हो मोटे चाचा?
हाथी है कि खेल
फर–फर

कहानियाँ
मुनमुन चुहिया, चन्द्रमा और प्रोक्सिमा सेन्टोरी
राजू काजू और मैडम
पढ़ा–लिखा बेटा
बुढ़िया, रामू की पत्नी और चूहा

यादें
नया स्कूल नया अनुभव

तथा
पखेरू मेरी याद के
व **अन्य स्तम्भ**

मोरंगे वर्ष 1 अंक 6

सम्पादन : प्रभात

सहयोग : भारती, कमलेश,
मीनू मिश्रा, रंजीता

डिज़ाइन : शिव कुमार गाँधी
आवरण पर माँडना मदन मीणा
के सौजन्य से

प्रूफ : नताशा
वितरण : लोकेश राठौर

प्रबंधन
मनीष पांडेय, सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, 3/155, हाउसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर, राजस्थान
Email;graminswm@gmail.com
website; graminshiksha.in
ph.no. & fax 07462-233057

'मोरंगे'
का प्रकाशन 'यात्रा फाउंडेशन' आस्ट्रेलिया,
के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

मौसम ठण्डा है और आकाश में काले बादल

मैं मनराज जगनपुरा में पढ़ता हूँ
मेरी छुट्टी ढाई बजे हो गई है
छुट्टी होते ही मैं घर की ओर रवाना हो गया हूँ
मौसम ठण्डा है, आकाश में काले बादल हैं
घर पहुँचने में मुझे शाम हो गयी है
मैं खाना खाकर सो गया हूँ

रात को ज़ोर–ज़ोर से पानी गिरने लगा
मुझे पानी पर सपने आने लगे
सपने में बाढ़ आ गयी
सुबह होते ही मैं उठ गया
बरसात के कारण मौसम ठण्डा था
फिर भी मैं नहाया मुझे ठण्ड लग गयी
खाना खाकर तैयार हो कर
अब मैं फिर पढ़ने रवाना हो गया हूँ
मैं लेट हो गया हूँ
मास्टर ने मुझसे बात की है
कि क्या बात है आजकल बड़े लेट हो रहे हो?
मैंने कहा–हाँ, कुछ ऐसी ही बात है मौसम में
मैं उसे देखते–देखते आता हूँ
अब मैंने अपना काम शुरू किया है तो
मेरा सब विषयों का काम हो गया है

अब मैं अपने साथियों के साथ खेलने लग गया हूँ
मेरी खेल में अभिरुचि है
छुट्टी के बाद मैं घर आ गया हूँ
घर आकर खाना खाया है
शाम को मैंने ठण्ड का
प्राथमिक उपचार किया है
ठण्ड रफूचक्कर हो गयी है

मनराज मीणा, 12 वर्ष, समूह–सागर

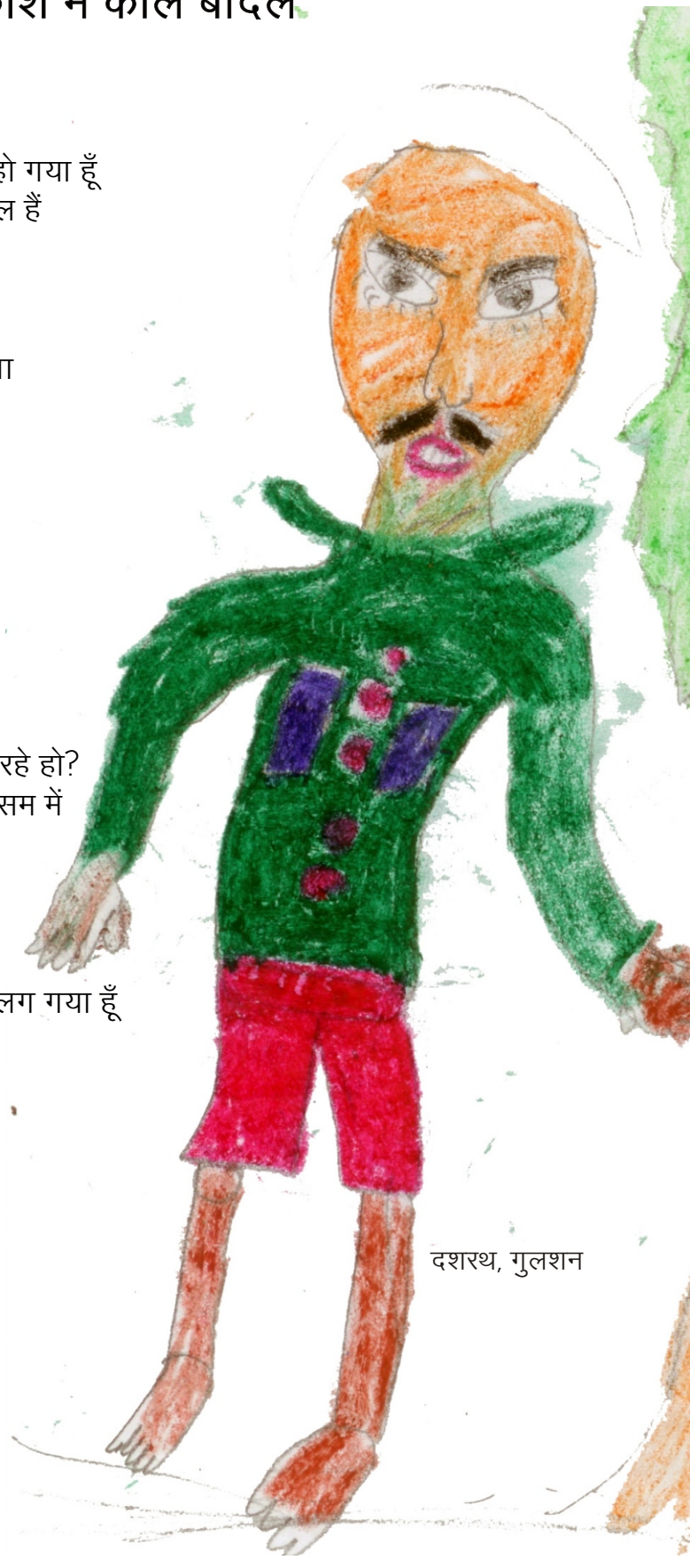

दशरथ, गुलशन

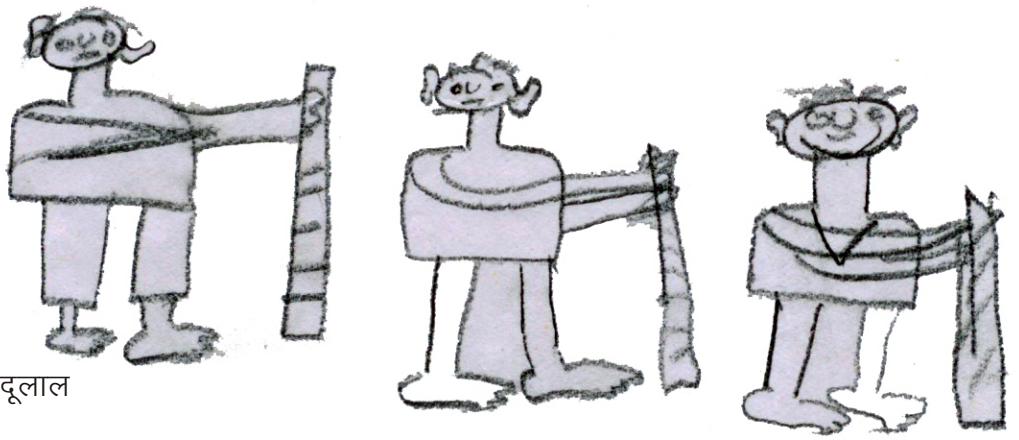

कादूलाल

मुनमुन चुहिया, चन्द्रमा और प्रोक्सिमा सेन्टोरी

मुनमुन चुहिया की एक ही ज़िद है, 'सूरज से शादी करना।' गोल चमकता गुलाबी सूरज मुनमुन को बहुत पसंद है। आज वह खुश है कि सूरज से मिलने वाली है। तो वह झटपट नदी पर जाकर नहा आयी है। घर आकर उसने खुद को कई बार आईने में देखा है। भीगी हुई वह खुद को भी बड़ी खूबसूरत लग रही थी। उसकी आँखों में आज एक अलग तरह की चमक थी।

सात रंगों वाला घोड़ा उसकी सूरज तक पहुँचने में मदद करने वाला था। वह उससे मिलने जा पहुँची। सतरंगी घोड़े से मिलकर उसे अनोखा लग रहा था। उसके शरीर में से सात रंग फूट रहे थे। उसके चार पैर थे और चार रंग–बिरंगे पंख। वह इन पंखों से आसमान में उड़ सकता था। पानी में तैर सकता था। पैरों से ज़मीन पर चल सकता था। सतरंगी घोड़ा मुनमुन की सहायता के लिए तैयार हो गया। मदद की इच्छा से भरे हुए सतरंगी घोड़े ने कहा, 'देखो, मेरी सूरज से बहुत जान पहचान नहीं है। और मैंने सुना है वह इतना गर्म है कि उस उस तक पहुँचना मुमकिन नहीं।'

सतरंगी घोड़े की बात सुनकर मुनमुन बेहद उदास हो गई। उसके चेहरे से फूट रहे खुशी के कल्ले गायब हो गए। सतरंगी घोड़े ने बात को सम्हालते हुए कहा, 'देखो, तुम ऐसे जी हलका मत करो। मैं तो तुम्हें यह बताने की कोशिश कर रहा था कि मामला कितना पेचीदा है। बाकी हम मिलकर कोशिश तो करेंगे ही।' सतरंगी की बात सुनकर मुनमुन के चेहरे पर खुशी के कल्ले फिर झूमने–झूलने लगे। यह देखकर सतरंगी ने मन ही मन कहा, 'यह चुहिया है कि छुईमुई?'

'सुनो! अपना कान इधर घुमाओ। मैं उसमें कुछ कहना चाहता हूँ।' सतरंगी ने मुनमुन से कहा, 'देखो, इस काम में चाँद हमारी मदद कर सकता है। हम फ़ौरन से पेशतर उससे जाकर मिल लेते हैं।' बस तय करने भर की देर थी कि वे अब उड़ चले। चन्द्रमा पर जाते हुए उन्हें बहुत आनन्द आ रहा था। खास तौर से मुनमुन को। वे तारों भरे आकाश में चाँद की ओर बढ़े जा रहे थे, बढ़े जा रहे थे। और जैसे–जैसे वे चाँद के नज़दीक पहुँच रहे थे, धरती से थाली की तरह गोल दिखने वाला चाँद एक विशाल होते जा रहे सफ़ेद पहिए की तरह दिखाई देने लगा।

आखिर वे चाँद के पास पहुँच गए। चाँद को पूरी बात बतायी। चाँद ने कहा, 'अरी भली मुनमुन, तुम सूरज से ही शादी क्यों करना चाहती हो, तुम और किसी से शादी कर लो। मुनमुन फिर उदास हो गई। कहने लगी, 'क्यों, आखिर मैं सूरज से शादी क्यों नहीं कर सकती?' चाँद ने कहा, 'इसके दो कारण हैं। एक तो सूरज बहुत गर्म है। तुम शादी करने उसके पास भी नहीं जा पाओगी। और यदि इसका कोई हल निकाल भी लेते हैं तो एक दूसरी समस्या भी है।'

'वो क्या है?' मुनमुन और सतरंगी ने एक साथ पूछा।

'मुझे चिन्ता है कि कहीं सूरज तुमसे शादी करके अपना काम न भूल जाए। तुम जानती हो मैं भी सूरज से चमकता हूँ और धरती पर दिन रात भी सूरज के कारण ही होते हैं। अगर सूरज घर–गृहस्थी में इतना उलझ जाए कि दिखना ही बंद कर दे तो बड़ी मुश्किल होगी। सभी जीव अँधेरे में कैसे रह पाएँगे?' चाँद ने अपनी आशंका उनके सामने ज़ाहिर की।

चाँद की यह बात सुनकर मुनमुन चुहिया की आँखों से आँसू टप–टप गिरने लगे। उसका दुखी चेहरा देखकर चाँद की समझ में आ गया कि यह सूरज से शादी किए बिना नहीं मानेगी। चन्द्रमा ने कुछ सोचकर कहा, 'चलो, इसका भी मैं कोई उपाय करूँगा। तुम लोग कल आओ, कल हम सूरज से बात करने चलेंगे।'

अगली सुबह मुनमुन सतरंगी के साथ चाँद के पास गई और वहाँ से वे तीनों सूरज से मिलने निकल पड़े। रास्ते में तारों को नज़दीक से देखना मुनमुन को बहुत अच्छा लग रहा था। तारों को लगातार पीछे छोड़ती हुई मुनमुन, सतरंगी और चन्द्रमा अब सूरज की तरफ़ बढ़ रहे थे। लेकिन सूरज की गर्मी मुनमुन के लिए असहनीय होने लगी। इसका भी उपाय खोजा गया। चन्द्रमा, सतरंगी व मुनमुन के आगे–आगे चलने लगा। वे दोनों चन्द्रमा की छाँव में चलने लगे। और अब वे सूरज के पास पहुँच गये थे। मुनमुन सूरज को देखकर बहुत खुश हो गई। चन्द्रमा ने सूरज से कहा कि मुनमुन को तुम बहुत अच्छे लगते हो और वह तुमसे शादी करना चाहती है।

सूरज ने कहा, 'वह मुझसे शादी कैसे करेगी?' मैं तो बहुत गर्म हूँ। मेरी गर्मी से डरकर तो वह तुम्हारे पीछे छुपी हुई है। इस पर मुनमुन बोली, 'तुम इतने गर्म क्यों हो आखिर?क्या तुम्हें नहीं पता कि ऐसे में तुमसे शादी करना मेरे लिए कितना मुश्किल हो रहा है। और मैं तुमसे शादी किए बिना रह भी नहीं सकती हूँ क्योंकि मुझे तो बस सूरज से शादी करना ही पसंद है।' सूरज ने पहली बार किसी धरती के प्राणी की आवाज़ सुनी थी। वो भी इतनी मीठी। वह मन ही मन कामना करने लगा, मेरी शादी हो तो बस इस मुनमुन चुहिया से। उसने कहा कि मेरे शरीर में छोटे–छोटे हाइड्रोजन परमाणु हैं वे आपस में टकराते हैं और मिलकर हीलियम परमाणु बन जाते हैं जिससे बहुत सारी गर्मी निकलती है। इसलिए मैं इतना गर्म रहता हूँ।' मुनमुन बोली, 'सूरज, क्या तुम कम–से–कम इतने ठण्डे नहीं हो सकते कि हम अंतरिक्ष में एक ठीक–ठाक सा घर बनाकर साथ रह सकें?' सूरज ने ऐसा तो पहले कभी सोचा ही नहीं था। उसे मुनमुन की सलाह इतनी सही लग रही थी कि वह मुनमुन की सलाह मानने के अलावा और कुछ नहीं करना चाहता था। उसने कहा, 'मैं ठण्डा हो सकता हूँ। देखो अभी ठण्डा हो जाता हूँ। यह कहकर सूरज अपने अन्दर से हाइड्रोजन को निकाल कर कम करने लगा। इससे धीरे–धीरे सूरज का वजन भी कम होने लगा और वह ठण्डा होने लगा।

जब वह ठण्डा हो गया चन्द्रमा ने मुनमुन व सूरज की शादी करवा दी। शादी के बाद मुनमुन व सूरज अन्तरिक्ष में दूर जाकर रहने लगे।

सूरज के ठण्डा हो जाने से धरती के निवासी अँधेरे व हलचल से घबरा गये और किलबिलाने लगे। धरती के निवासियों की समस्या का उपाय भी चन्द्रमा को ही करना था। वह अपनी योजना के अनुसार सतरंगी को लेकर सूरज से कुछ दूरी पर रहने वाले तारे प्रोक्सिमा सेन्टोरी के पास गया। प्रोक्सिमा सेन्टोरी भी सूरज की तरह ही गर्म है लेकिन यह दूर होने की वजह से हमें तारे जैसा दिखता है। सूरज के बाद यह सूरज का काम आसानी से करेगा, यह चन्द्रमा जानता था। प्रोक्सिमा सेन्टोरी से बात करके चन्द्रमा उसे सूरज के स्थान पर ले आया। अब फिर से सभी को प्रकाश मिलने लगा।

दुनिया का कारोबार फिर से उसी तरह चलने लगा। चन्द्रमा फिर से अपनी जगह पर लौट आया। सतरंगी घोड़ा भी चन्द्रमा को धन्यवाद देने के बाद उड़ते हुए धरती पर आकर उतर गया। धरती पर आकर उसने उड़ना बंद किया और पैरों पर खड़ा होकर चलने लगा। धरती पर प्रोक्सिमा सेन्टोरी के प्रकाश में सतरंगी घोड़े की टापों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

दुर्गा प्रसाद, शिक्षक, जगनपुरा

रामसिया

सुनीता गुर्जर

राजू, काजू और मैडम

एक बार दो लड़के थे। एक का नाम था राजू, दूसरे का नाम था काजू। दोनों स्कूल की एक बाजू (तरफ़) पढ़ते थे। दोनों साथ–साथ पढ़ाई करते। साथ–साथ खेलते–कूदते। साथ–साथ पिटाई खाते। पिटाई की वजह कुछ इस तरह की होती कि मैडम पूछती, 'राजू–काजू, क्या कर रहे हो?' वे कहते, 'कुछ नहीं कर रहे, मैडम।' मैडम आँखें तरेरती, 'कुछ क्यों नहीं कर रहे?कुछ करो नहीं तो दीवार के भचींट दे मारूँगी, समझे।'

'ये खुद भी तो कुछ नहीं कर रही है।' राजू–काजू बुदबुदाते हुए अपने आस–पास के बच्चों को सुनाते। मैडम उन्हीं की तरफ़ देखती रहती पर समझ नहीं पाती कि आखिर चल क्या रहा है?

एक दिन काजू बोला, 'मैडम, काम दो नहीं तो आपको डमरू बना दूँगा।' मैडम बोली, 'ज़्यादा मत बोल नहीं तो उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दूँगी।' मैडम के ऐसा कहने से राजू–काजू की बाहर जाने की इच्छा हुई। मैडम तो मेज पर सो चुकी थी। वे बाहर जाकर खेलने लगे। राजू खेल में गिर पड़ा तो उसके सिर में खून निकल आया। इस बात की खबर मैडम को लगी तो भागी–भागी आई, बोली, 'आजा राजू, आजा काजू, काम दूँगी। इतने में छुट्टी का समय हो गया। दूसरे दिन राजू–काजू अपनी–अपनी मम्मियों को बुला लाए। राजू बोला, 'मम्मी इस मैडम ने काम नहीं दिया इसलिए मैं गिरा था।' राजू–काजू की मम्मियाँ बोलीं, 'मैडम, पढ़ाना है तो सही पढ़ाओ, नहीं तो मत पढ़ाया करो। आज के बाद गलती नहीं होनी चाहिए।' फिर वे घर चली गईं। मैडम ने फिर भी काम नहीं दिया। राजू और काजू ने फिर उस स्कूल में पढ़ना ही छोड़ दिया।

रणवीर गुर्जर, उम्र–12 वर्ष, समूह–बादल, बोदल

प्रियंका

क्या कर रहे हो मोटे चाचा?

एक लड़की आई
आकर लड़की बोली
क्या कर रहे हो, मोटे चाचा?

चाचा बोला–
कुछ नहीं कर रहे, बेटा
बस रो रहे हैं?

रो क्यों रहे हो, मोटे चाचा?
कुछ नहीं, बेटा, बस यूँ ही
तेरी चाची गुम हो गई है?

तो इसमें रोने की क्या बात है, चाचा?
कुछ नहीं, बेटा, बस यूँ ही
वो बच्चों को छोड़ गई है
बच्चे भी रो रहे हैं

ऐसा सुनकर तो बच्चे
और भी ज़ोर– ज़ोर से रोने लगे
कहाँ है हमारी मम्मी?
कहाँ है हमारी मम्मी?

लड़की बोली–
रोओ मत, बच्चो
रोओ मत, मोटे चाचा

नहीं रोएँगे, बेटी
मोटे चाचा ने आँखे पोंछी
खुद की और बच्चों की

रामवीर, उम्र–10 वर्ष, समूह–झील

फर–फर

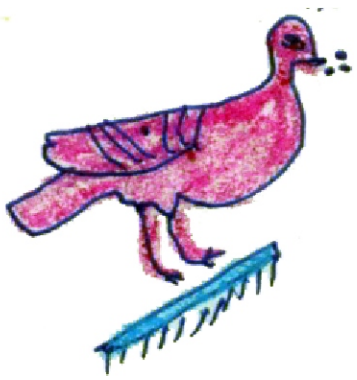

पानी बोला झर–झर
मेढ़क बोला टर–टर
सर्दी आयी लाई
धूप गुलाबी भर–भर
पेड़ थे हरे रंगीले
मार्च ने कर दिए पीले
पतझर आया फर–फर
पत्ते बोले खर–खर

बीना मीणा, उम्र–11वर्ष,
समूह–झील, जगनपुरा

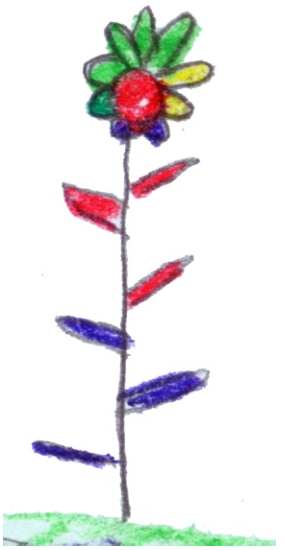

सुनीता गुर्जर

यादें

राजकृतां बैरवा

चाहत

नया स्कूल नया अनुभव

विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं अपने सपने को लेकर बेचैन रहने लगा था। मेरा सपना था कि मैं शिक्षक बनूँगा। इसी दौरान ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर में शिक्षकों की भर्ती के लिए अखबार में विज्ञापन निकला। मैंने आवेदन कर दिया। यहाँ मेरा चयन हो गया। गर्मियों के दिन थे। बच्चों की छुट्टी थी और शिक्षकों का प्रशिक्षण चल रहा था, जिसमें शामिल होने का अवसर मुझे मिला।

शिक्षक के रूप में प्रशिक्षण लेते हुए मुझे कुछ बातें अटपटी, कुछ चटपटी, कुछ खटपटी और कुछ छटपटी लगी। अटपटी तो यह लगी कि बच्चों को कभी भी पीटोगे नहीं। पीटना छोड़िए डाँटोगे भी नहीं। मुझे समझ में नहीं आ रहा था फिर हम शिक्षक बिरादरी के लोग करेंगे क्या?खैर। चटपटी बात ये लगी कि स्कूल में घंटी नहीं लगती। बच्चों की कोई स्कूल ड्रेस नहीं है। शिक्षकों को बच्चों के साथ रोज़ाना गीत–कविताएँ गाने होंगे। कभी–कभी नाचना भी होगा। बच्चों के साथ मैदान में जाकर खेलना होगा। सुन–सुन कर ही दिल काँप जाता था।

खटपटी बात ये लगी कि जिस स्कूल में नियुक्ति मिलेगी उसी गाँव में समुदाय के बीच रहना होगा। कक्षा याने समूह में शिक्षक को भी बच्चों के साथ नीचे जमीन पर ही बैठना होगा। छटपटी बात ये लगी कि मुझे कटार–फरिया के स्कूल में काम करना होगा जहाँ फ़िलहाल एक भी नामांकन नहीं है। तो इस तरह दिन निकलते गए और वो दिन करीब आ गया जब मुझे अपने तीन अन्य साथी शिक्षकों के साथ कटार–फरिया में स्कूल खोले जाने की तैयारी करने जाना था।

मैं, दिनेश शुक्ला जी, रेणु जी और रंजीता जी–हम चार लोग मिशन पर रवाना हुए। चारों ने पीठ पर थैले टाँगे और सवाई माधोपुर के खण्डार बस स्टैण्ड से कटार–फरिया गाँव के लिए बस पकड़ी। इस गाँव के बारे में हमें पूर्व–ज्ञान इतना ही था कि ये राधेश्याम जी का गाँव था। राधेश्याम जी ग्रामीण शिक्षा केन्द्र में काम करते हैं। वे संस्था और समुदाय के बीच पुल का काम करते हैं। हमें अवलोकन, अनुमान और कुछ मौखिक सवालों की मदद से उनके घर पहुँचना था, सो हम पहुँच गये। वहाँ हमने हमारा सामान रख दिया। उनके घर ही खाना खाया। खाना खाते ही हम समुदाय सम्पर्क के लिए निकल गये। सबसे पहले हमने फरिया गाँव में सम्पर्क किया। लोगों को बताया कि उदय सामुदायिक पाठशाला नाम से एक नया स्कूल खुला है। वहाँ नए तरह से पढ़ाया जाता है। बच्चों को सीखने के लिए सभी ज़रूरी सहायक–सामग्री स्कूल में मिल जाएगी। किताब, कापी, पेंसिल, खेल और कला के सामान से लेकर विज्ञान के प्रयोग की सामग्री तक सब कुछ। कोई शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाएगा। ऐसी बातें सुनकर लोगों के तरह–तरह के सवाल सामने आते जिनका हम धैर्यपूर्वक जवाब देते। गाँव के बहुत से बच्चे हमारे साथ हो गये और रेला सा चलने लगा। ये बच्चे हमारी मदद कर रहे थे। बच्चे ही हमें सारे घरों में लेकर गए।
स्कूल गाँव से दो किलोमीटर दूर जंगल के समीप में थी। हम शाला सहायक बद्री जी के साथ वहाँ गए। स्कूल के लिए साफ़ की गई जगह में पाँच समूह चलाए जाने के लिए पाँच छप्पर तैयार हो चुके थे। जंगली जानवरों से बचाव के लिए एक अदद मचान बना लिया गया था।

अब हम कटार गाँव की ओर बढ़े जहाँ के बच्चे भी यहाँ पढ़ने के लिए आने वाले थे। वह गाँव स्कूल से तीन किलोमीटर दूर था। राजस्थान में जून की शाम भी बहुत तपिश से भरी होती है। हम थककर चकानाचूर हो गए थे। रात में मैं अपने साथी कमांडो दिनेश शुक्ला जी के साथ स्कूल में मचान पर सोया। रेणु जी और रंजीता जी फरिया गाँव में चली गईं।
पहली जुलाई को स्कूल का उद्घाटन समारोह हुआ। कटार–फरिया और आसपास के गाँवों के समुदाय के बीच स्कूल के आज से विधिवत चलने की औपचारिक घोषणा हुई। समुदाय में पुरूषों के अलावा स्त्रियों और बच्चों की खासी तादाद थी। प्रवेश हेतु नाम लिखवाने के लिए लम्बी कतार लगी। उस दिन कुछ पौधे भी स्कूल के परिसर में लगाए गए।
हम दिन भर स्कूल में काम करते। शाम को समुदाय सम्पर्क पर निकलते और लौटकर स्कूल में ही आकर ठहरते। हमारे पास रहने के लिए कोई ठिकाना नहीं था। स्कूल में पानी की समस्या थी। बच्चों के पीने के लिए पानी स्कूल से लगभग एक किलोमीटर दूर से साइकिल पर ड्रम से आता था। हमारे लिए भी एक ड्रम पानी आता था जिसमें हम खाना बनाते और पीने के काम में लेते। नहाने–धोने के लिए कोई व्यवस्था वहाँ नहीं थी। हम तीन–चार दिन में एक बार नहाते। जिस दिन नहाना होता उस दिन हम गाँव में जाते, वह भी सुबह जल्दी। बोरवेल पर नहाते। जल्दी–जल्दी में कपड़े भी नहीं धो पाते थे। केवल एक बार रोटी बनाते वह भी मोटी–मोटी और जली हुई होती थी। क्योंकि चूल्हे पर रोटी बनाने का अनुभव हममें से किसी को भी नहीं था।
एक दिन गाँव वालों ने हमसे पूछा कि आप रहते कहाँ हैं?हमने कहा, 'स्कूल में।' उन्होंन कहा कि, 'सतर्क रहकर सोया करो। वहाँ रात को शेर व भालू आ जाते हैं।' रणथम्भौर वन्य जीव अभयारण्य के भूखे–प्यासे जंगली जीव चीता, तेंदुआ, भालू, जंगली सूअर आदि शिकार की

तलाश में भटकते हुए इधर से होते हुए गाँवों में आते–जाते थे। आए दिन इसकी सूचना अखबारों से भी मिलती रहती थी।

हमें डर महसूस होने लगा। हमारे पास बचाव के लिए साधन भी नहीं थे। उस दिन के बाद से हम टापरी (छान) पर सोने लगे। एक रात जब सभी साथी छान पर सो रहे थे, टाईगर के दहाड़ने की आवाज़ आई। मेरी नींद खुल गई। आवाज़ ऐसी थी कि टाईगर कहीं पास ही बोल रहा है। मैं घबरा गया। मैंने डर के मारे यह बात दिनेश जी व विजय सिंह (एक और साथी शिक्षक विजय सिंह जी इस बीच आ गए थे।) को भी नहीं बतायी क्योंकि मेरी हिम्मत ही नहीं हो रही थी। सुबह मैंने उनको बताया। दिन में हमें पता चला कि रात को टाईगर ने एक गाय को मार दिया था और वह खाड़ में दहाड़ रहा था। अब हमारी हिम्मत छान पर सोने की भी नहीं बची। गाँव में कमरा काफ़ी प्रयास के बाद भी नहीं मिल पा रहा था। स्कूल में रात में ठहरा नहीं जा रहा था।

खाने–पीने, नहाने–धोने और रहने की बदइंतज़ामी के चलते मेरा स्वास्थ्य मुझसे नाराज़ हो गया और टाटा, बाय–बाय करके चला गया। मैं ज़ोरदार ढंग से बीमार पड़ गया। कई दिनों तक बीमार रहा। धीरे–धीरे स्थितियाँ ठीक हुईं। हमें फरिया गाँव में कमरा मिल गया। मैं विजय सिंह जी और दिनेश जी, साथ ही रहने लगे।

अब हम स्कूल की छुट्टी के बाद नियमित बच्चों के काम का अंकन करते हैं, अगले दिन की योजना बनाते हैं, फिर समुदाय सम्पर्क पर निकल जाते हैं। दूरियाँ इतनी हैं कि समुदाय सम्पर्क से लौटते हुए रात हो ही जाती है। हम जंगली रास्तों में तारों भरे आकाश नीचे पैदल चलते हुए अपने आशियाने में लौटते हैं। खाना–वाना बनाते हैं। इस दौरान कई स्थानीय लोग बोलने–बतियाने के लिए आ जाते हैं। किस्से–कहानियाँ, आए दिन की खबरों का विश्लेषण, यह सब चलता रहता है। सुबह के गुलाबी रास्तों पर चलते हुए बच्चे गाँवों से स्कूल की ओर आ रहे होंगे ऐसा सोचते हुए फ़टाफ़ट तैयार होकर हम भी स्कूल का रुख करते हैं। अब काम करना अच्छा लगने लगा है। बच्चों के साथ दिन–भर बिताना रोज एक सुखद अनुभव की तरह लगता है। मैंने शिक्षक बनने का सपना ही देखा था मगर शिक्षक होना सचमुच क्या है उस रोमांच को मैं सही मायनों में अब महसूस कर पा रहा हूँ – बच्चों के बीच काम करते हुए, समुदाय के बीच रहते हुए।

अशोक शर्मा, शिक्षक, कटार–फरिया

भाषा की सहेलियाँ बूझो यार पहेलियाँ

1 आमेर को आम, जोधपुर को बड़
आगरा की रूई तीनून की जड़।
2 जहाँ–जहाँ चलते हैं, वहाँ–वहाँ साथ रहती है।
3 एक तोप दो नली, जाड़े में जलधार चली।
4 चार इलायची एक अदरक, बीच में ढड़क।
5 छोटा था तब तो हरा था, बड़ा हुआ तो लाल हो गया।
6 सिर पर ताने हरी छतरी, नीचे पहने सफेद धोती।
7 हरी हरी डूँगरी, पीला पीला फूल।
8 गर्मियों में छोरी–छापरी सर्दियों में डोकरी।

(ये पहेलियाँ **सागर समूह**, जगनपुरा के बच्चों ने भेजी है।)

मोरंगे 5 में बूझी गई पहेलियों के जवाब –
1 शहद। 2 चिमनी। 3 दीपक। 4 मूली। 5 ओला। 6 आग। 7 ताला–चाबी।
8 कापी–पेन।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

'मोरंगे' के पाँचवे अंक में दी गई निम्नलिखित अधूरी कहानी को बहुत सारे बच्चों ने पूरी करके भेजा है। कुछ चुनी हुई कहानियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

एक आदमी था। उसकी तीन लड़कियाँ थी। बड़ी लड़की का नाम बकरी था। उससे छोटी का नाम बिल्ली था। सबसे छोटी का नाम मुर्गी था। उनकी माँ की मृत्यु हो चुकी थी।

1
एक दिन तीनों लड़कियाँ जंगल में लकड़ी लेने गईं। बड़ी लड़की बकरी को एक बकरा मिला। बकरे ने उससे कहा, 'तुम मुझसे शादी करोगी क्या?' बकरी ने उत्तर दिया, 'मैं शादी करने के लिए तैयार हूँ।' आगे बिल्ली नाम की लड़की को एक बिल्ला मिला। बिल्ली ने उससे कहा, 'तुम मुझसे शादी करोगे क्या?' बिल्ला इस बात पर खुशी से नाचने लगा। बकरी ने बकरे से, बिल्ली ने बिल्ले से शादी कर ली।

फिर मुर्गी को एक मुर्गा मिला। मुर्गा बोला, 'तुम मुझसे विवाह करोगी क्या?' मुर्गी नाराज़ हो

गई। फिर पता नहीं उसे क्या हुआ कि बोली, 'हाँ, मैं तुमसे शादी करूँगी।'
तीनों लड़कियों ने अपनी–अपनी पसंद का घर बसा लिया।
विनोद, उम्र 11 वर्ष, व विजेन्द्र, उम्र 13 वर्ष, समूह–सूरज, बोदल

2
वे तीनों लड़कियाँ लकड़ी बेचकर अपना गुज़ारा चलाती थीं। एक दिन उनको वन विभाग वाले ने पकड़ लिया। मैं सड़क–सड़क आ रहा था। मैंने देखा कि वे तीनों रो रही थीं। मैंने उनकी छुड़वाई दी। फिर वह छाण गाँव में मिर्च तोड़ने जा रही थीं। एक दिन बिल्ली की आँख में मिर्ची चली गयी। मुर्गी ने उसकी आँखों में फूँक मारी। धीरे–धीरे उसकी आँख ठीक हो गयी।

वे तीनों बहन जंगल में रहती थीं। एक बार एक राजा आया, राजा का नाम बैल था। उन तीनों की बैल राजा से दोस्ती हो गई। अब वे तीन से चार हो गए और साथ–साथ रहने लगे।
रणवीर गुर्जर, उम्र–12 वर्ष, समूह–बादल, बोदल

3
जब वे तीनों लड़कियाँ कहीं घूमने जातीं तो उन्हें दूसरे बच्चे चिढ़ाते थे। कहते थे कि बकरी की शादी बकरे से होगी। बिल्ली की शादी बिल्ले से होगी। जब बिल्ले को कुत्ता खाएगा और बिल्ला मर जाएगा तब बिल्ली रोएगी, 'मेरा पति मर गया।' फिर बकरी में–में करती हुई आएगी और मुर्गी कुकडु–कू करती आएगी। पर वे तीनों लड़की चिढ़ती नहीं थी। लेकिन एक दिन चिढ़ गयीं और अपने पापा को सारी बात बता दी। उनके पापा उन बच्चों के पास गए। और उन लड़कों से कहा कि अबसे बकरी का नाम सीता, बिल्ली का नाम गीता और मुर्गी का नाम मीता है। अब सब बच्चों ने उनको चिढ़ाना बंद कर दिया और सबने उनके साथ खेलना शुरू कर दिया।
अंकित, उम्र–11 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष

4
बेचारी तीनों लड़कियों को कुछ भी खाने के लिए नहीं मिलता था। तीनों लड़कियाँ इधर–उधर घूमती रहती थीं। बकरी तो जंगल में जाकर घास खा आती थी। आदमी बकरी का दूध निकाल कर बिल्ली को पिला देता था। मुर्गी इधर–उधर कीड़े–मकोड़े ढूँढ़–ढूँढ़ कर खाती थी। एक दिन बकरी को घास खाने को नहीं मिली तो बकरी ने दूध नहीं दिया। उस दिन बिल्ली को भी दूध नहीं मिला। मुर्गी तो इधर–उधर से कीड़े इकट्ठे करके खा लेती थी। मुर्गी ने एक अण्डा दिया। और बिल्ली से कहा तुम इस अण्डे को खा लो और बकरी के लिए कहीं से एक रोटी ले आओ। बिल्ली ने ऐसा ही किया। अण्डा खाकर पानी पीकर वो विष्णु जी के कमरे पर गई। विष्णु जी रोटी बना रहे थे। रोटी बनाने के बाद जब वे आटे की परात धोने के लिए बाहर गए तो बिल्ली बकरी के लिए एक रोटी उठा कर ले गई।

इधर विष्णु जी ने जब देखा कि एक रोटी घट गई। तो वे सोचने लगे कि बिना घटाए कुछ भी नहीं घटता। मैंने तो छह में से एक रोटी नहीं घटायी फिर ये पाँच ही बाकी क्यों रह गई?
रीना मीणा, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर

5

वो आदमी बकरी, मुर्गी और बिल्ली को नचा–नचा कर आटा माँगता और गाँव–गाँव घूमता था। एक दिन वे घूमते हुए प्रभात के घर पहुँच गए। आदमी ने कहा कि भाई आटा दे दो। प्रभात कूलर की हवा में सो रहा था। प्रभात उसके पास आया और बोला, 'तेरे पास ये लड़कियाँ कौन हैं?' उसने कहा, 'भइया, इंसान का ये पेट गलत बनाया गया है। ये मेरी बेटियाँ हैं। हम नाच–गाना करके आटा माँगकर खाते हैं।' ये सुनकर प्रभात ने कहा, 'तू यहीं रुक, मैं अभी आया।' और प्रभात एक लाख रूपये लेकर आ गया और उनको सौंप दिये। वह आदमी बोला, 'तू पैसे कहाँ से लाया?' उसने कहा, 'मुझे मनीष जी देते हैं और मैं मोरंगे छापता हूँ।' वह आदमी चला गया और उसने खूब सारा बड़ा घर बना लिया और वह प्रभात को नहीं भूला।

रामवीर गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, समूह–झील

7

तीनों लड़कियाँ अलग–अलग देशों में रहने लगीं। तीनों को रोज़गार मिल गया था। एक दिन तीनों के मन में एक ही बात का विचार आया तो तीनों ही एक जगह पर आ गईं। रोज़गार खत्म होने से तीनों ही बिल्कुल गरीब हो चुकी थीं। तो वे एक दिन जंगल में चली गईं। जंगल में ही पानी पीती और जंगल में ही फल–फूल का भोजन करती थीं। एक दिन तीनों लड़कियों के पास एक शेर आ गया। वह तीनों लड़कियों पर झपटा तो बकरी पहाड़ के ऊपर चढ़ गईं और बिल्ली और मुर्गी पेड़ के ऊपर चढ़ गईं। शेर उनकी तलाश में पेड़ के नीचे बैठा रहा। धीरे–धीरे शेर को नींद आ गईं तो तीनों लड़कियाँ उतरकर घने जंगल में जाकर एक गुफ़ा में छुप गईं। शेर की आँखें खुली तो शेर ने पेड़ के ऊपर देखा तो पेड़ पर कोई भी नहीं था। शेर अपनी गुफ़ा में चला गया। शेर को गुफ़ा में से खुशबू आ रही थी। उसने सोचा कि आज तो वो ही लड़कियाँ गुफ़ा में घुसी हुई हैं। तीनों लड़कियाँ शेर को देखते ही ज़ोर से चीखीं तो शेर बहोश हो गया। अब वे वहाँ से भागकर और भी घने जंगल में चली गईं।

धर्मराज सैनी, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

राजेन्द्र गुर्जर

‘मोरंगे’ के पाँचवे अंक में दिए गए चित्र पर बहुत सारे बच्चों ने कविता लिखकर भेजी है। कुछ चुनी हुई कविताएँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

1
फिर भी देख सुन रहा है?

आदमी की आँख शरीर पर
आदमी की आँख मुँह पर भी
हाथ भी नहीं शरीर पर
मुँह पर कान नहीं
कान तो माथे पर हैं
दो आदमी आँखों पर
रस्सी बाँध कर चढ़ रहे हैं
बेचारा आदमी
आँख बंद करके देख रहा है
कान बंद करके सुन रहा है

दीपक मीणा, उम्र 12 वर्ष
समूह–सागर, जगनपुरा

2
ओह उसका सिर उसकी नाक

ओह उसका सिर गोल–गोल
ओह उसकी नाक लम्बी–लम्बी
ओह उसकी आँख गोल–गोल
ओह उसके सिर पर बजता बाजा
ओह उसके पैर पेड़ जैसे
शरीर उसका गोल–गोल
गर्दन उसकी छोटी
मूँछ उसकी बड़ी

लाडबाई, उम्र 9 वर्ष
समूह–सूरज, बोदल

3
पम्प जैसी नाक

सिर चपटा–चपटा
आँखें गोल–गोल
पाँव छोटे–छोटे
नाक पम्प जैसी
पेट मोटा–मोटा
कान छोटे–छोटे
जीभ कुत्ते की सी
पंख तोते जैसे
लम्बा पेड़ जैसा

रचना, समूह–सूरज, बोदल

4
पैर हैं उसके तंबू जैसे

सिर है उसका पट्टी जैसा
नाक है उसकी सूँड जैसी
आँख है उसकी नारियल जैसी
दाँत है उसके रीछ जैसे
पेट है उसका ढोल जैसा
हाथ हैं उसके छोटे–छोटे
पैर हैं उसके तंबू जैसे

रेखा, समूह–सूरज, बोदल

5
आदमी

मोटा सा है, छोटा सा है
गोल सा है आदमी
टोपी उसकी पीली पीली
लम्बे उसके कान
चलता है वो गोल गोल सा
आँखें उसकी लाल

जीतू, समूह–सूरज, बोदल

6
जैसे हॉकी की बॉल

आँख है उसकी गोल
जैसे हॉकी की हो बॉल
नाक उसकी लचकी–लचकी
कमर उसकी पतली–पतली
सिर है उसका चपटा
मुँह उसका सफ़ेद आटा

विनोद, उम्र 11 वर्ष
समूह–सूरज, बोदल

7
बहरूपिया

आँखों से लगता है उल्लू
गालों से लगता है बल्लू
मूँछों से लगता है मल्लू
टाँगों से लगता है टल्लू
सिर पर उल्टी टोपी पहने
लकड़ी के थे उसके गहने
बड़ी अजब पोशाक बनाई
जूतों की पॉलिश करवाई
मूँछों पर जलेबी लटकाए
चलता जाए चलता जाए
गली–मुहल्ला घूमे सारा
बच्चों को लगता है प्यारा
गले में उसके लटके माला
वो तो है बहरूपिया निराला

राजेश कुमावत, शिक्षक–बोदल

बुढ़िया, रामू की पत्नी और चूहा

एक बार एक बुढ़िया थी। उस बुढ़िया का एक लड़का भी था। लड़के का नाम रामू था। एक दिन बुढ़िया रामू की शादी की बात करने जयपुर गयी। उसने लड़के की शादी की बात कर ली और आ गयी। आकर रामू से कहा, 'बेटा, मैं तेरी शादी की बात कर आई हूँ।' रामू ने पूछा, 'कब करोगी मेरी शादी?' बुढ़िया बोली, 'कल कर दूँगी।' इस तरह रामू और उसकी माँ दिन भर शादी की ही बात करते रहे। बात करते–करते शाम हो गयी और बुढ़िया ने खाना पका लिया। बुढ़िया और रामू खाना खाकर सो गये। सुबह होते ही शादी की तैयारी होने लगी। बारात चली गई और रामू लाडी को लेकर घर आ गया। शादी के बाद घर में खर्च बढ़ गए। पैसों की कमी पड़ने लगी। रामू पैसे कमाने परदेस चला गया।

रामू के घर के सामने एक बहुत बड़ी दूकान थी। दूकान में एक चूहा रहता था। एक दिन उस चूहे ने रामू की पत्नी से कहा, 'थारो लोग तो कमाने गयो है। तू म्हारे बैठ जा। याने तू मुझसे शादी कर ले।' यह कहकर चूहा दूकान में चला गया।

रामू की पत्नी ने बुढ़िया से कहा कि एक चूहा रोज़ मेरे पास आता है और कहता है, 'तू म्हारे बैठ जा।' बुढ़िया बोली, 'ठीक है, तू चूहा के बैठ जा।' वह औरत चूहे के बैठ गयी। चूहा खुशी से नाचने लगा।

कुछ दिनों बाद बाद रामू पैसे कमाकर वापस आ गया। रामू की पत्नी बुढ़िया से बोली कि चूहा तो अभी–अभी मर गया।' बुढ़िया बोली, 'थोड़ी देर रो ले फिर फेंक देना।' रामू की पत्नी चूहे को रोने लगी। रोने के थोड़ी देर बाद उसने चूहे को फेंक दिया।

रामू इतना पैसा कमाकर लाया था कि उसे दुबारा परदेस जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। अब वह बुढ़िया और अपनी पत्नी के साथ वहीं रहने लगा। रामू अब गाँव में खेती करता था। रामू की पत्नी और बुढ़िया खेती के काम में उसकी मदद करते थे।

(यह लोककथा **जितेन्द्र गुर्जर**, उम्र–14 वर्ष, समूह–बादल ने हमें भेजी है।)

मोरंगे 5 में प्रकाशित कहानी बंदर और हाथी ने शादी की साक्षी (उम्र 6 वर्ष) द्वारा शिक्षिका को बोलकर सुनाई गई थी। भूलवश यह छप गया था कि यह कहानी अमन, अंकित, सेजल, लोनी, अनुष्का, नंदनी और वत्सा ने मिलकर बनायी है। अनजाने में हुई इस चूक के लिए हमें खेद है।
–सम्पादक

प्रभात जी, आप हमारी कहानी मोरंगे में क्यों नहीं छापते, और बच्चों की तो आप छाप देते हो। हमारी कहानी तुम्हें बुरी लगती है क्या?यह अच्छी कहानी है इसे मोरंगे में भेजता हूँ, इस कहानी को मोरंगे में छापना।
हरिओम, उम्र–10 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष

नमस्ते, प्रभात जी, हमने मोरंगे पढ़ी। मोरंगे में सबसे पहले आपकी बात छापते हो। मेन पृष्ठ पर बच्चों की छापा करो, आपकी नहीं। हमारे चित्र से बुरे–बुरे चित्र छप गये हैं लेकिन आप हमारे चित्र या बात क्यों नहीं छापते हो? हमने एक बात लिखी थी इस मोरंगे से पहले वाली मोरंगे में वो आपने छापी है। वो बात आपको कैसे समझ में आई, बोलो, आपने झट से छाप दी? अब हमारी बातें और कविताएँ, चुटकुले ज़रूर छापना। और मोरंगे आप लेट क्यों भेजते हो, जल्दी भेजा करो।
चौथमल सैनी, उम्र–13 वर्ष, समूह–सागर

नमस्ते, प्रभात जी, मोरंगे में समूह को 'समह' क्यों लिखते हैं?आप समूह लिखना नहीं जानते क्या?अबकी बार मेरी कहानी, कविता, चित्र और पत्र चारों आनी चाहिए।
श्रीमोहन मीणा, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर

नमस्ते, प्रभात जी, हमें यह बात बुरी लगी कि हमारी कहानी, कविता कुछ भी नहीं छपी। और हमारे चित्र नहीं छापे तो अब हम कुछ भी नहीं लिखेंगे।
रामहरी सैनी, उम्र–11 साल, समूह–सागर

मुझे नवम्बर, '09 में मोरंगे में गंगाधरन मर गये कहानी अच्छी लगी क्योंकि उसमें किसी को भी नहीं पता था कि गंगाधरन कौन है?और हर जगह हल्ला हो रहा है कि गंगाधरन मर गये। और मुझे भाग तो एक रही थी, तुम बता रही हो दो, चोट्टियों झूठ बोलती हो यह अच्छी लगी और मुझे पूरी मोरंगे अच्छी लगी।
अंकित, उम्र–11 वर्ष, समूह–रेनबो

प्रिय प्रभात अंकल, नमस्ते। मुझे मोरंगे अच्छी लगी। ओ बीज, गुठली, इन दोनों में बहुत हँसी ह। हम जो कहानी या कविता या और कुछ लिखें तो उसे मोंरगे में छाप देना। निधि, उम्र–11 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष
नमस्ते, प्रभात अंकल, मुझे मोरंगे बहुत अच्छी लगी और आपने हमारे लिए बहुत अच्छा किया इसलिए हम भी आपको कुछ देना चाहते हैं। जिस तरह आपने हमारी चिन्ता की उसी तरह हम भी आप की चिन्ता कर रहे हैं।
रेनी, उम्र–7 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष

प्रिय प्रभात अंकल, नमस्ते। मैं ठीक हूँ, आप कैसे हो? मुझे मोरंगे अच्छी लगी इस बार मुझे पखेरू मेरी याद के अच्छी लगी। प्रभात अंकल, आप हमारी मोरंगे छापा करो। मुझे सबसे अच्छी कहानी फ्रेजियन नस्ल की गाय लगी। मोरंगे में टीना मीना चिंकी चंदर बड़ी शरारत उनके अन्दर मुझे अच्छी लगी।
सेजल, उम्र–7 वर्ष, **अमर**, उम्र–8 वर्ष, **रिया,** उम्र–8 वर्ष, **भावना**, उम्र–9 वर्ष, **सम्यक**, उम्र–7 वर्ष, **महक,** उम्र–7 वर्ष, **यश**, उम्र–6 वर्ष, समूह–रेनबो

रामसियाबाई बैरवा

कहानिका और उम्रदराज़ सम्पादक

कहानिका एक सुंदर शहर की अलियों–गलियों में भटक रही थी। भटकते हुए वह शहर की साफ़–सुथरी और शांत कॉलोनी में आ गई थी। यहाँ काली नई सड़कें थीं जो थोड़ी–थोड़ी सी दूर जाकर घूम जाती थीं। काली सड़क के दोनों ओर सेमल, अमलताश, गुलमोहर, शीशम और अगैहरा–वगैहरा के पेड़ थे। मकानों में मेंहदी की झाड़ियाँ थीं। शहर की सबसे ताज़ी हवाएँ इस कॉलोनी की सड़कों पर घूमने आती थीं। कहानिका को काली सड़क पर ताज़ी हवाओं में उड़ते पीले पत्तों के बीच टहलना बहुत अच्छा लग रहा था।

टहलते हुए कहानिका की नज़र एक मकान पर पड़ी। मकान को देखकर कहानिका को लगा कि यह शायद इस कॉलोनी का सबसे पुराना और मरियल मकान है। यह एक ऐसे मरियल घोड़े की तरह खड़ा है जो कभी भी बैठ सकता है। मकान के बाहर बोर्ड पर लिखा है – 'बच्चों की पत्रिका का सम्पादकीय कार्यालय।' यह पढ़कर कहानिका को इस मकान में गहरी रुचि हो गई। वह मकान के लॉन में आ गई।

'सम्पादक जी कहाँ बैठते हैं?' कहानिका ने बरामदे में खड़ी ऊबी हुई महिला से पूछा।

'सम्पादक जी?ये क्या होता है?' ऊबी हुई महिला ने उबासी लेकर मुँह पर चुटकी बजाते हुए कहा।

'जी, वो बच्चों की पत्रिका के सम्पादक जी रहते होंगे न यहाँ?' कहानिका ने कहा।

'बच्चों की पत्रिका?ये क्या हुई?' ऊबी हुई महिला ने पूरा मुँह फाड़कर उबासी ली। फिर वह बरामदे में पड़ी बेंत की कुर्सी पर ढहते हुए कहने लगी, 'पत्रिका तो संसार में तीन ही होती हैं – जन्म पत्रिका, लग्न पत्रिका और राजस्थान पत्रिका। ये बच्चों की पत्रिका क्या हुई?हैंअ?'
'बच्चों की पत्रिका भी होती है। इसी मकान से निकलती है। बाहर बोर्ड पर लिखा है।'
कहानिका ने 'क्या मुसीबत है' बुदबुदाते हुए कहा।
'बच्चों की पत्रिका नाम का तो कोई नहीं रहता। अच्छा सरनेम क्या लगाती हैं ये बच्चों की पत्रिका?'
'सरनेम जैसा तो कुछ नहीं। पर इनके सम्पादक जी का नाम वर्मा जी है।'
'ब्रह्मा जी तो यहाँ कोई नहीं रहते?'
'ब्रह्मा जी नहीं वर्मा जी।'
'वर्मा जी। वोअ, ओह! उनके तो थैले भर–भरके चिट्ठियाँ आती है रोज़। गाड़ियाँ भर–भर कर मिलने वाले। मैं तो समझ नहीं पाती हूँ कि वे कैसे आदमी हैं?'
'क्या आप मकान मालकिन हैं?'
'नहीं, हम भी उनकी तरह किरायेदार हैं पर उनसे अच्छे हैं क्योंकि हमारी कोई डाक नहीं आती। और न ही इस दुनिया में हमारे कोई मिलने वाले हैं।' ऊबी हुई महिला ने बकबक–झकझक करने की तरह ये वाक्य बोले।
'मगर वे मिलेंगे कहाँ?'
'पीछे।' महिला ने मकान के बगल की गली में होते हुए पीछे की तरफ़ निकल जाने का इशारा किया।

कहानिका वहाँ गई तो देखा यह मकान का एक हिस्सा है जिसमें एक तंग बरामदा और दो छोटे–छोटे कमरे हैं। एक कमरे में एक लड़का सोया हुआ है। एक कमरे में कुर्सी पर उम्रदराज़ सम्पादक जी बैठे हैं, मेज़ पर कुछ लिखत–पढ़त कर रहे हैं। नब्बे से आगे बढ़ चुकी उम्र में भी वे मेज़–कुर्सी पर सीधे बैठ कर काम करते हुए बहुत ही सुंदर लग रहे हैं। पर कर्म की इस गरिमा और सुंदरता को देखने वाला वहाँ कोई नहीं है। उनकी मेज़ पर किताबें ईंटों की टालों की तरह चुनी हुई हैं। मकान में चारों तरफ़ सीलन और पुरानेपन का साम्राज्य है। सम्पादक जी के कमरे में आने के बाद नये पोस्टकार्ड भी ऐसी आभा देने लगते हैं मानों बरसों पहले लिखे गए हों। हाथ में लेकर पढ़ने की ज़रूरत की तो टूट कर गिर जाएँगे। कुर्सी मेज़ के पास एक लकड़ी का पलंग था जो किसी राजा के किले से उठाया गया लगता था। खंदकों में फँसे सैनिकों की तरह आलमारियों में ठुँसी किताबों में इतनी धूल भरी थी कि अब और धूल नहीं भर सकती थी। कई पुरस्कृत किताबों पर नमीदार धूल इस ढंग से जमी थी कि उसे पपड़ी की तरह उठाया जा सकता था। कमरे की दीवारों की पुतायी गले हुए कागज की तरह झर रही थी। मकड़ियों के लिए शहर में इससे शानदार कमरा ढूँढना मुश्किल था। कमरे की छत के कोनों में विशाल जाले बनाकर रह रही मकड़ियों को शहर की सबसे अमीर मकड़ियाँ होने का पदक दिया जा सकता था। कई तमगे इस कमरे में आने के बाद से ही अपनी तकदीर को दोष दे रहे थे। वे ऐसे कहते जान पड़ रहे थे कि इससे आलीशान जगह तो हमारी तसवीरों को मिलीं जो अखबारों के चिकने पृष्ठों पर प्रकाशित

हुईं। यह विवरण इस बात का गवाह है कि सम्पादक जी की मदद करने वाला वहाँ दूर–दूर तक कोई नहीं था। वे अकेले दम पर ही पत्रिका का सारा काम पूरा करते थे। बच्चों की जिस पत्रिका की देश भर में इतनी धूम है। जिसकी बच्चे इतनी प्रतीक्षा करते हैं। जिस दिन बाज़ार में आती हैं मालिक से लेकर हॉकर तक सबकी चाँदी हो जाती है। उस पत्रिका के सम्पादक के बैठने की जगह ऐसी होगी। खुद कहानिका को ही अचरज हो रहा था, आपकी और मेरी तो बात ही क्या?

कहानिका ने कमरे के दरवाजे पर खड़े होकर नमस्ते किया।
'अरे आ जाओ! आ जाओ!' सम्पादक जी ने ऐसे कहा मानो कहानिका को जन्म से जानते हों।
कहानिका की सारी हिचक–टिचक दूर हो गई। और उसका वह आत्मविश्वास भी ऊपर आया जो ऊबी हुई महिला से मिलकर काफ़ी नीचे चला गया था। वह भीतर आ गई।
'यहाँ बैठो।' सम्पादक जी ने अपनी कुर्सी से सटाकर रखी कुर्सी पर कहानिका को हाथ पकड़ कर बिठाते हुए कहा।
'मैं बमुश्किल कुछ सुन पाता हूँ। सुनने की इन्द्रियों ने मदद करने से इंकार कर दिया है।' सम्पादक जी ने कहा और हँसे।
'ओह!' कहानिका को सम्पादक जी का इस तरह परिचय देना अनोखा लगा।
'कमरे में वह जो लड़का सो रहा है, मेरा पोता है। उसकी भी मेरे जैसी ही हालत है। पर वो थोड़ा–बहुत सुन पाता है। मैं इस मेज़ पर रखे फ़ोन की घंटी यहाँ नहीं सुन पाता हूँ। पर वो उस कमरे में सुन लेता है। एक पोती और है। वो स्कूल पढ़ने गई है।'
'वो भी नहीं सुन पाती होगी।' ऐसा सोचते हुए कहानिका गर्दन लटकाए बैठी थी।
'नहीं, वो हम जैसी नहीं है। हम तीन ही इस घर में रहते हैं। वो हम तीनों के लिए सुनने और बोलने का काम करती है। उसके स्कूल से आने के बाद ही सुनने–बोलने का काम ठीक से चल पाता है।' सम्पादक जी ने कहानिका के चेहरे की उलझन को समझते हुए कहा।
'हूँ!' कहानिका के होठों ने बुदबुदाया।
'हूँ हूँ मत करो। जोर से हँसो। ये तो ज़िन्दगी है। ऐसे ही चलती है। हर हालत में खुश रहना सीख लेना चाहिए। और क्या, भाई?मेरी तरह तुम भी मस्त रहो। और तुम भी क्या है न मस्त ही हो। तुम तो खुद ही एक कहानिका हो। तुम जो कहोगी मैं नहीं सुन सकूँगा। इसलिए अब मैं जो कहता हूँ उसे तुम सुनो। और क्या?...अरे लड़के, कहानिका के लिए चाय बनाओ, माने तीन चाय बनाओ।' सम्पादक ने सामने वाले कमरे में सो रहे लड़के को आवाज़ लगाई। लड़का बच्चों की पत्रिका के नये अंक की तीन प्रतियाँ ले आया। 'अरे, ये नहीं, यार। ये बाद में लाना। चाय बनाओ पहले, तीन चाय।' सम्पादक जी ने इशारे से समझाते हुए कहा।
लड़के ने भी तीन चाय बनाने का इशारा वापस किया। हँसते हुए बोला, 'चाय!'
'हाँ!' सम्पादक जी ने कहा। 'मैंने इसे कुछ शब्द बोलना सिखा दिया है। मैंने कहा कि माने, यार, तुम थोड़ा सा सुन सकते हो तो थोड़ा सा बोल क्यों नहीं सकते?तो अब ये कुछ बातें बोल लेता है। ...बहुत अच्छा किया तुम मिलने आ गई। मैं ज़्यादा बोल गया।' सम्पादक जी ने बच्चों की तरह शरमाते हुए कहा।
'नहीं, नहीं, आप बोलिए न।'

'क्या?'
'बोलिए, आप कुछ भी ज़्यादा नहीं बोले हैं।'
'हूँ। अरे, मैंने सुना नहीं। इस कागज़ पर लिख दो।'
कहानिका ने लिखा, 'बोलिए न आप।' सम्पादक जी हँसे, 'हैं हैं! बोलूँ! बोल ही तो रहा हूँ। अब तुम बोलो। पर क्या फ़ायदा, मैं सुनूँगा नहीं। लो चाय आ गई। चाय लो।' सबने चाय पी।
'अब मैं चलूँगी।' कहानिका ने कहा।
'अरे कहाँ! अभी तो आयी हो। बैठो। आज यहीं रुको। कितने दिन हो शहर में?'
'आज–आज ही।' कहानिका ने कागज़ पर लिखा।
'तुमने बहुत इंतज़ार करवाया। अब पत्रिका के अगले अंक में तुम आ रही हो। अब मुलाकात भी हो गई। तुम्हें देख लिया। अब मैंने तय कर लिया तुम्हें प्रकाशित करूँगा। तो बात पक्की रही। पक्की करो तभी जाने दूँगा।' कहते हुए सम्पादक ने अपना उम्रदराज़ पीला काँपता हाथ कहानिका के आगे बढ़ाया। कहानिका ने अपनी नयी, कोमल, नाजुक, गुलाबी हथेली सम्पादक जी के हाथों पर रख दी।
सम्पादक जी कहानिका को बाहर सड़क तक छोड़ने आये। 'किसी भी अच्छी कहानिका को सम्पादक की मेज़ पर बहुत दिन तक नहीं पड़े रहना चाहिए। और क्या? कहानिका को अपने लेखक और सम्पादक से मुक्त ही रहना चाहिए।'
'अच्छा, नमस्ते। फिर आऊँगी।' कहते हुए कहानिका ने सम्पादक जी से विदा ली। इस सुखद विदाई के बाद सम्पादक अपने संग्रहालयनुमा आवास की तरफ़ बढ़ गए और कहानिका सबसे ताज़ी हवाओं और उड़ते पीले पत्तों के बीच चलती जाती हुई गुम हो गई।

प्रभात

इस चित्र को ध्यान में रखते हुए कोई एक कविता या कहानी लिखो और मोरंगे को भेजो।

दीपक

पढ़ा लिखा बेटा

बेटा शहर से गाँव पिता के पास आया।

पिता ने कहा, 'आज घास–कटाई है।

पाँचा उठाओ और मेरे साथ चलो।

तुम मेरी मदद करोगे।'

पर बेटा काम नहीं करना चाहता था, इसलिए बोला,

'मैने ज्ञान–विज्ञान सीखे हैं और किसानों की भाषा भूल गया हूँ। मुझे नहीं मालूम की पाँचा क्या होता है।'

कुछ समय बाद जब वह अहाते में टहल रहा था,

उसका पैर **पाँचे** पर पड़ा,

जो सीधा उसके **माथे से जा टकराया।**

तब उसे याद आ गया की पाँचा क्या होता है। माथा पकड़ते हुए बोला,

'किस बेवकूफ ने
पाँचा यहाँ फेंका है।'

लियो तोलस्तोय